# अथर्ववेद

चारों वेदों में ऋक्, यजुः और साम - ये मन्त्रलक्षण के आधार पर प्रसिद्ध हैं। वैदिक मन्त्रों का उच्चारण तीन प्रकार से किया जाता है - (i) जिस मन्त्र में अर्थ के आधार पर पाद-व्यवस्था निश्चित है, उसे ऋक् कहते हैं (ii) गीत्यात्मक मन्त्र को साम तथा (iii) पद्यमय और गानमय मन्त्रों से अतिरिक्त जितने मन्त्र हैं, उन्हें यजुः कहा जाता है। यजुर्मन्त्र गद्य-रूप में पढ़े जाते हैं।

अथर्ववेद में तीनों प्रकार के मन्त्र उपलब्ध हैं। अतः इस वेद का नाम ऋक्, यजुः और साम अर्थात् मन्त्रलक्षण के आधार पर नहीं, अपितु प्रतिपाद्य विषयवस्तु के आधार पर है। इसी कारण अथर्ववेद के विविध नाम भी हैं -

(i) **आंगिरस वेद** → गोपथ ब्राह्मण में अंगिरस ऋषि और उनके वंशजों द्वारा दृष्ट होने के कारण इसे आंगिरस वेद कहते हैं → स आंगिरसो वेदोऽभवत् (1/8)।

(ii) **अथर्वाङ्गिरस वेद** → अथर्ववेद का प्राचीन नाम अथर्वाङ्गिरस है। इसमें अथर्वा और अंगिरस ऋषि के वंशजों द्वारा दृष्ट मंत्रों का संग्रह है। अतः इसे अथर्वाङ्गिरस वेद कहते हैं। अथर्ववेद में भी इसका नाम मिलता है → अथर्वाङ्गिरसो मुखम् (10/7/20)।

(iii) **ब्रह्मवेद** → इसका एक प्राचीन नाम ब्रह्मवेद है। स्वयं अथर्ववेद में इसका उल्लेख प्राप्त होता है - तमृचश्च सामानि च यजूंषि च ब्रह्म चानुव्यचलन (15/5/6)।

(iv) **भृग्वङ्गिरोवेद** → गोपथ (3/1) में इसे भृग्वङ्गिरोवेद कहा गया है। ध्यातव्य है कि भृग्वंगिरा के द्वारा दृष्ट मंत्रों की संख्या 670 है।

Scanned with CamScanner

(v) क्षत्रवेद → इसमें राजाओं और क्षत्रियों का वर्णन होने से शतपथ ब्राह्मण में क्षत्रवेद कहा गया है।

(vi) भैषज्यवेद → इसमें आयुर्वेद, चिकित्सा, औषधियों आदि का बहुत वर्णन है, इसलिए इसे भैषज्यवेद कहते हैं। अथर्ववेद में इसे भैषजा कहा है (11/6/14)।

(vii) छन्दोवेद → अथर्ववेद में इसे छन्दस् या छन्दोवेद भी कहा गया है। यह छन्दः प्रधान वेद है, अतः इसे छन्दस् कहते हैं।

(viii) महीवेद → अथर्ववेद में इसे 'मही' कहा गया है (10/7/14)। महती ब्रह्मविद्या के उपदेश अथवा महत्त्वपूर्ण पृथ्वी सूक्त के कारण इसे महीवेद भी कहते हैं।

पाणिनीय धातुपाठ में थुर्वी धातु हिंसा के अर्थ में पठित है। वैदिक शब्दों के परोक्षवृत्तिसाधर्म्य के आधार पर 'थुर्वी' धातु ही थर्व के रूप में परिणत हो गया है। अतः जिससे हिंसा नहीं होती है उसको अथर्व कहते हैं।

वैदिक वाङ्मय में हिंसा शब्द किसी की हानि या परस्पर होनेवाले असामञ्जस्य आदि के अर्थ में प्रयुक्त है। अतः केवल प्राणवियोगानुकूल व्यापार ही हिंसा नहीं है। सामान्यतः हिंसा दो प्रकार की होती है - (i) आमुष्मिकी और (ii) ऐहिकी। जिस कर्म या आचरण से पारलौकिक सुख में बाधा होती है, उसको आमुष्मिकी हिंसा कहते हैं। इस प्रकार की हिंसा को अथर्ववेदोक्त कर्मों से दूर किया जा सकता है। दूसरी इहलौकिक सुख में होनेवाली बाधा भी अथर्ववेदोक्त शान्तिक तथा पौष्टिक कर्मों से दूर की जा सकती है। अतः जिससे किसी प्रकार की

Scanned with CamScanner

हिंसा नहीं हो पाती है, उसके कारण 'अथर्ववेद' ऐसा नाम है।

वस्तुतः अथर्ववेद में शान्तिकर्म और पौष्टिककर्म के अतिरिक्त आयुर्वेद, राजनीति, सामाजिक विन्यास आदि विषयों से सम्बद्ध सूक्तों की प्रचुरता है। इन्हीं वर्ण्य विषयों को दृष्टिपथ में रखकर कहा गया है कि अन्य वेद तो परलोक में फल देते हैं, अथर्ववेद इसी लोक में फलप्रद है। याज्ञिक-कार्यकलापों में अथर्ववेद का विशेष महत्त्व था। अथर्ववेद के आचार्य का नाम ब्रह्मा था। वही यज्ञ का अध्यक्ष होता था। कहा जाता है कि अन्य पुरोहित वाणी प्रधान कार्य करते हैं, किन्तु ब्रह्मा नामक अथर्ववेद का आचार्य अपने मन की शेयता से उन सभी पुरोहितों का मार्गदर्शन करता था। अथर्ववेद की इन प्रवृत्तियों को ही ध्यान में रखकर ए ए मैकडानल ने कहा है-

"For the history of civilisation it is on the whole more interesting than the Rigveda itself."

महर्षि वेदव्यास ने जिस शिष्य को अथर्व का अध्ययन कराया उनका नाम सुमन्तु था। भागवत में अभिचार प्रधान वेद के मुख्य प्रचारक होने के कारण सुमन्तु दारुण मुनि की उपाधि से विभूषित किये गए हैं। सुमन्तु ने दो संहितायें अपने शिष्य कबन्ध को दीं जिनके दो पट्टशिष्य थे- पथ्य और देवदर्श। पथ्य के तीन शिष्य थे- जाजलि, कुमुद और शौनक। देवदर्श के चार शिष्य हुए- मौद, ब्रह्मबलि, पिप्पलाद और शौष्कायनि। इनमें शौनक के शिष्य बभ्रु तथा सैन्धवायन बतलाये जाते हैं। इन्हीं मुनियों के द्वारा अथर्ववेद का विशेष प्रचार सम्पन्न हुआ।

Scanned with CamScanner

अथर्ववेद के पाँच उपवेद माने जाते हैं- सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहासवेद और पुराणवेद - "पञ्चवेदान् निरमिमीत- सर्पवेदं पिशाचवेदम् असुरवेदम् इतिहासवेदं पुराणवेदं-चेति" (गोपथ ब्राह्मण 1/10)। इनमें से इतिहास और पुराण ही प्राप्य हैं, शेष उपवेद अप्राप्य हैं। शतपथ ब्राह्मण में उपवेदों में देवजनविद्यावेद और मायावेद का भी उल्लेख है।

महाभाष्यकार पतञ्जलि ने अथर्ववेद की नौ शाखाओं को स्वीकार किया है। इनके नाम हैं- पैप्पलाद, तौद, मौद, शौनक, जाजल, जलद, ब्रह्मवद, देवदर्श और चारणवैद्य। इनमें से केवल दो शाखाओं- पैप्पलाद और शौनक की ही संहिताएं उपलब्ध हैं। इनमें भी शौनक शाखा की संहिता ही पूर्णरूप से उपलब्ध है। पैप्पलादसंहिता अभी अपूर्ण ही उपलब्ध है।

अथर्ववेद में 20 काण्ड, 730 सूक्त, 36 प्रपाठक और 5987 मन्त्र हैं। इसमें मन्त्रों का विभाजन विशिष्ट शैली का है। पहले काण्ड से सातवें काण्ड तक छोटे-छोटे सूक्त हैं। आठवें काण्ड से 12वें काण्ड तक विषय की विभिन्नता और बड़े-बड़े सूक्तों का संकलन है। तेरहवें से बीसवें काण्ड तक भी अधिकमंत्रों वाले सूक्त हैं, परन्तु विषय की एकरूपता है। अथर्ववेद का लगभग $\frac{1}{4}$ भाग ऋग्वेद से उद्धृत है। इसमें पन्द्रहवें तथा सोलहवें काण्ड में गद्यशैली का प्रयोग भी मिलता है।

अथर्ववेद की दो प्रधान प्रवृत्तियाँ हैं- रक्षामयी तथा विनाशमयी। इसमें नीचे लिखे वर्ण्य विषयों का प्राधान्य है-

(i) स्थाली पाक - अन्नसिद्धि
(ii) मेधाजनन - बुद्धिसंवर्द्धन के उपाय
(iii) ब्रह्मचर्य - ब्रह्म की प्राप्ति के लिए अपेक्षित जीवनचर्या
(iv) ग्राम-नगर-राष्ट्र-वर्धन - इनकी प्राप्ति और संवर्धन के उपाय
(v) पुत्र-पशु-धन-धान्य-प्रजा-रथान्दोलिकादि सम्पत्तियों के लाभ

(vi) सामनस्य - समाज में एकता की प्रतिष्ठा
(vii) राजकर्म - प्रजा के अभ्युदय के लिए राजनीतिक प्रवृत्तियाँ
(viii) सेना और युद्ध सम्बन्धी पराक्रम
(ix) पाप-क्षय-कर्म → पापों से रहित होने के साधन
(x) भैषज्य - रोगों का उपचार
(xi) संस्कार - गर्भाधानादि
(xii) अभिचार - मन्त्रों और कर्मकाण्डों से दूसरों को वश में करना या शत्रु का नाश करना
(xiii) ब्रह्म-विचार
(xiv) आयुष्य
(xv) याज्ञिक क्रिया-कलाप

अथर्ववेद में वैयक्तिक और सामाजिक सुख-शान्ति के उपायों का मांत्रिक संयोजन है। छोटी से छोटी भी अशान्ति की स्थिति अथर्ववेद के ऋषि के लिए उपेक्षणीय नहीं है। उन्होंने शान्तिकर्म के अन्तर्गत भूकम्प, विद्युत्पात, अग्निभय, रोग, महामारी, शत्रुभय, मृत्युभय, जल-वायु का भय, कुलक्षय आदि से बचने के लिए शान्ति कर्म की व्यवस्था बनाई है। इस प्रकार इस वेद को सर्वविध पुरुषार्थ का प्रतिष्ठापक मान सकते हैं। शास्त्रीय दृष्टि से धर्मदर्शन, अध्यात्म और तत्त्वमीमांसा से सम्बन्ध सभी तत्त्व इसमें विद्यमान हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से राजनीति, अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र और ज्ञान-विज्ञान का यह भण्डार है। साहित्यिक दृष्टि से रस, अलंकार, छन्द तथा भाव एवं भाषा-सौन्दर्य आदि विषय इनमें विद्यमान हैं। व्यवहारोपयोगिता की दृष्टि से भावात्मक प्रेरणा, मनन-चिन्तन, कर्तव्योपदेश, आचारशिक्षा और नीतिशिक्षा का इसमें विपुल भण्डार है। संस्कृति की दृष्टि से इसमें ~~भावात्मक प्रेरणा, मनन-चिन्तन,~~

Scanned with CamScanner

उच्च, मध्यम और निम्न - इन तीनों स्तरों का स्वरूप परिलक्षित होता है। अतः अथर्ववेद वैदिक वाङ्मय का शिरोभूषण है। विषय की विविधता, स्थूल से सूक्ष्मतम तत्त्वों का प्रतिपादन, शास्त्रीयता के साथ व्यावहारिता का सम्मिश्रण इसकी मुख्य विशेषता है।

Scanned with CamScanner